कथा सरिता

अच्छे लोगों का संग चंदन की तरह

जीवन में हमेशा चंदन जैसे संस्कारी व्यक्तियों का ही साथ करना चाहिए और कोयले के सदृश दुर्जनों से दूर रहना चाहिए।

एक विद्वान और सदाचारी सज्जन थे। शहर में सभी उनकी सज्जनता की मिसाल देते थे जबकि उनका बेटा विपरीत स्वभाव का था। वह गलत व्यक्तियों से मित्रता कर बैठा था जिनकी संगत में वह बिगड़ गया था। सज्जन ने अपने बेटे को कई बार समझाने की कोशिश की, लेकिन वह अपने मित्रों का साथ छोड़ने के लिए तैयार नहीं था। जब उन्हें लगा कि वे सभी तरह से अपने बेटे को समझा चुके हैं तभी उन्हें एक तरकीब सूझी। उन्होंने अपने बेटे को बुलाकर कहा – बेटा, मैंने तुम्हें अनेक प्रकार से शिक्षा दी है, लेकिन अब मैं तुमसे इस संबंध में कुछ नहीं कहूँगा। बस मेरा एक काम कर दो। बेटे ने पूछा - क्या करना है? तो सज्जन ने अपने बेटे को एक हाथ में चूल्हे में से कोयला लाने के लिए कहा और दूसरे हाथ में पूजाकक्ष से चंदन लाने के लिए कहा। बेटा एक हाथ में कोयला और दूसरे हाथ में चंदन लेकर आया। कुछ देर बाद सज्जन ने कहा - अब इन्हें इनके स्थान पर वापस रख आओ। बेटे ने वैसा ही किया। बेटे के जिस हाथ में कोयला था वह हाथ काला दिखाई दे रहा था और जिस हाथ में चंदन था उसमें से सुगंध आ रही थी।

सज्जन ने अपने बेटे को दोनों हाथ दिखाते हुए समझाया - बेटे, एक बात याद रखना, अच्छे आदमियों का संग चंदन जैसा होता है। जब तक संग रहेगा, तब तक तो सुगंध मिलती ही है लेकिन संग छूटने के बाद भी अच्छे विचारों की सुगंध जिंदगी भर साथ रहती है। दुर्जनों का संग कोयले के समान होता है। जब तक हाथ में कोयला है तब तक तो हाथ काला दिखाई देता है लेकिन उसे छोड़ने के बाद भी उसकी कालिमा बनी रहती है। इसलिए जीवन में हमेशा चंदन जैसे संस्कारी व्यक्तियों का ही साथ करना और कोयले जैसे दुर्जनों से दूर रहना। बेटे ने इस सीख को अपने जीवन में उतार लिया।

दसुआ। स्वामी विवेकानन्द जयंती पर विशाल शोभा यात्रा के अवसर पर फूलों से स्वागत करते हुए ब्र.कु. ज्ञानी एवं ब्र.कु. सुमन।

करनाल (सेक्टर-7)। राजयोग मेडीटेशन सेन्टर भवन के शिलान्यास समारोह में मंच पर उपस्थित डॉ. डी.डी. शर्मा, ब्र.कु. अमीरचन्द, ब्र.कु. उत्तरा, भ्राता एस.पी. चौहान तथा ब्र.कु. प्रेम।

सच्चा धर्म

एक साधु अपने शिष्यों के साथ एक मेले में जा रहे थे। एक स्थान पर बैठे हुए कुछ बाबा माला फेर रहे थे, परन्तु वे बार-बार सामने बिछी चादर पर देख लेते कि लोगों ने कितने पैसे दान में दिए हैं। उन्हें देखकर साधु हँस पड़े। आगे एक तपस्वी शीर्षासन लगाए खड़े थे, उन्हें देखकर साधु फिर हँसे और आगे एक पंडित जी भागवत कह रहे थे, उनके आगे चेलों की जमात बैठी थी। उन्हें देखकर साधु फिर खिल-खिलाकर हँसे। उससे आगे एक कैंप में एक डाक्टर एक रोगी की सच्चा धर्मपरिचर्या में लगा था। यह देखकर साधु की आँखों में आँसू आ गए।

आश्रम लौटने पर एक शिष्य ने पहले तीन स्थानों पर हँसने और चौथे पर रोने का कारण पूछा तो उन्होने उत्तर दिया -''बेटा! आज माला, आसन, प्राणायाम और कथा-भागवत को ही धर्म समझकर अधिकांश लोग ढोंग कर रहे हैं। यह देखकर हँसी आ गई, जबकि भगवान का काम करने वाला एक ही डॉक्टर दिखा, यह देखकर दु:ख हुआ कि लोग धर्म के वास्तविक अर्थ को न जाने कब समझेंगे? सच्चा धर्म संसार की सेवा और उसे सुधारना है, जप-तप नहीं।''

धर्म प्रदर्शन की नहीं, साधना की कला है।

सौहार्दपूर्ण व्यवहार

किसी समय बुखारा नगर में एक उदार राजा का शासन था। वह प्रजा का हर तरीके से ख्याल रखता और दिन-रात लोकोपकारी कार्यों में लगा रहता। लोग भी उसे जी-जान से चाहते और बहुत आदर करते थे। राजा के हर आदेश या आग्रह को प्रजा सिर-आँखों पर लेती, किन्तु उस राज्य में एक व्यक्ति ऐसा भी था, जो दिन-रात राजा को कोसा करता। वह अत्यंत दरिद्र था, किन्तु अपनी दरिद्रता मिटाने के लिए कुछ काम करना उसे घोर अरूचिकर प्रतीत होता। उसकी जुबान राजा की निंदा में विषय वमन करने में निरंतर रत रहती थी। राजा यह सब जानकर भी शांत रहता, लेकिन एक दिन उसने इस पर विशेष रूप से विचार किया। फलस्वरूप एक रात्रि उस दरिद्र के द्वार पर राजा का एक सेवक उपस्थित हुआ। उसने कहा, राजा ने आपके लिए यह एक आटे की बोरी, एक साबुन की थैली और एक खांड की पुड़िया उपहार स्वरूप भेजी है, क्योंकि आप उन्हें बहुत याद करते हैं। वह व्यक्ति गर्व से फूल उठा और पड़ोस में रहने वाले मंदिर के पुजारी से बोला, राजा भी मेरी सद्भावनाएं पाने के इच्छुक हैं। तभी तो मेरा आदर करते हुए ये उपहार भेजे हैं। पुजारी ने कहा राजा ने तुम्हें इशारे में कुछ समझाया है। आटा तुम्हारे खाली पेट के लिए है साबुन तुम्हारे दुर्गंधयुक्त शरीर की सफाई के लिए और खांड तुम्हारी कड़वी जुबान को मधुर बनाने के लिए। उस दिन के बाद से वह व्यक्ति सुधर गया। वस्तुत: दृष्टता का दमन विवेकपूर्ण सज्जनता से ही संभव है। सौहार्दपूर्ण व्यवहार उसे स्वयं ही सुधरने के लिए विवश कर देता है।

गाजोल। विधायक सुशील चन्द्र राय एवं असित प्रसाद अध्यक्ष रोटरी क्लब गाजोल को ईश्वरीय संदेश सुनाते हुए ब्र.कु. कमला।

हारनियां खुर्द-सिरसा। म्यूजियम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. अमीरचन्द, भूपेश मेहता अध्यक्ष कांग्रेस कमेटी सिरसा शहरी, कामरेड जसवंत सिंह जोश, राधाकृष्ण बांसल समाज सेवी सिरसा।

अपने दुर्गुणों को दूर करते रहें

जैसे भौतिक दुनिया में हमें शत्रुओं और प्रतिद्वंद्वियों का परिचय रहता है, उनसे खतरे का आभास होता है, उसी तरह आध्यात्मिक संसार में हमें दुर्गुणों से सावधान रहना होगा। जागरूक लोग दुर्गुणों को प्रतिदिन मिटाते रहते हैं। इनके सफाये के लिए वे लगातार सावधान रहते हैं। दुर्गुणों पर जरा भी भरोसा न रखें। इन्हें आग बनने में देर नहीं लगेगी। इन्हें सुविधा यह है कि इनके लिए प्रवेशद्वार खूब हैं। ये तयशुदा रास्ते से अपनी यात्रा पूरी नहीं करते। कई बार तो मनुष्य को पता ही नहीं चल पाता और ये सद्गुणों की आड में ही प्रवेश कर जाते हैं आक्रमण करने के लिए वक्त का इंतजार करना भी इन्हें बहुत अच्छे से आता है। जब हम अपने सद्कर्मों से, सदाचरण से ऊपर चढ रहे होते हैं, तब ये हमें पीछे घसीटने में कमी नहीं छोडते। एकांत इनकी कर्मस्थली होती है। बडे-बडे संयमी एकांत में इनकी मार से धराशायी हो गए। पहाडी पर चढ रही या उतरने वाली गाडी के सारे कलपुर्जे ठीक होना बहुत जरूरी हैं, समतल जमीन पर तो गडबडी होने से एक बार बचा जा सकता है। दुर्गुणों के साथ जीवन पहाडी यात्रा जैसा है। इस दौरान इनके पास नुकसान करने के अवसर ज्यादा होते हैं। इनसे निपटा कैसे जाए? ये संत और भगवंत की उपस्थिति में बेचैन और बाद में निष्क्रिय हो जाते हैं। गुरू इनके लिए बैरियर बन जाते हैं। गुरू के पास एक कला होती हैं गुरूमंत्र की। उसके कारण हम जीवन को स्थितियों से समरस बना लेते हैं। हम प्रतिपल एक परमशक्ति से जुड जाते हैं और एक वर्जित क्षेत्र हमारे आसपास बन जाता है, जहां दुर्गुण हमें देख तो सकते हैं पर निकट आ नहीं सकते।

हीराकुड-उडीसा। विधायक भ्राता जयनारायण मिश्रा को आध्यात्मिक संदेश देने के पश्चात ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. बिन्दु। साथ है दुर्गा मन्दिर ट्रस्टी भ्राता सुधीर मिश्रा तथा अन्य।

बच्चों के भीतर जगाएं भक्ति-भाव

वैसे तो बुराई सबके लिए खतरनाक है, लेकिन बुराइयां बच्चों का शिकार ज्यादा करती हैं। इसलिए माता-पिता को इस मामले में विशेष रूप से जागरूक रहना पडेगा। बच्चे के भीतर यदि बुराई दिखें तो तुरंत उसे न सिर्फ शरीर से, बल्कि आत्मा से भी कुचल डाले वैसे तो बुराई पलटकर वार करती है और हो सकता है कि माता-पिता को अपने चपेट में ले ले। इसे अविवेक कहा जाएगा। अविवेकी माता-पिता अपने बच्चों की बुराई दूर करने में असफल होंगे। बालमन का विवेक जाग्रत नहीं रहता, वह सिर्फ जो दिख रहा है और जो हो रहा है, उस पर टिकता है। बच्चे परिस्थिति में गलती नहीं देखते, वे गलतियों से परिस्थितियां बनाकर चलते हैं। ऐसे समय बच्चे मदद और सहानुभूति के पात्र होंगे माता-पिता को तुरन्त उनकी आदतों पर ध्यान देकर नियंत्रण करना होगा। बुराइयों के लिए आदतें रथ की तरह होती हैं। पालकों के लिए यह जरूरी है कि या तो इस तरह का रथ बच्चों के जीवन में आए न, या फिर उस रथ की रस्सी बड़े लोग अपने हाथ में ले ले। बुराइयों और आदतों की दूरी बनाने में समय और ऊर्जा दोनों देने पडते हैं। इसे टाल-मटोल की वृत्ति से नहीं निबटाया जा सकता। आजकल चारों ओर माहौल में बुराइयां छिपी हैं। ऐसे में बच्चों को एक ही बात सिखाई जानी चाहिए कि बचकर रहो। यही सबसे अच्छा तरीका है बाहर से और भीतर से भी। भीतर से बचने के लिए परिवार के संस्कार काम आएंगे। संस्कार देने के लिए धर्म काम आता है। धर्म से परिचय कराने के लिए बच्चों के भीतर भक्ति-भाव जगाया जाना चाहिए।

जयसिंहपुर। ''नशा मुक्ति अभियान'' के अन्तर्गत ब्र.कु. प्रेम, ब्र.कु. सपना, ब्र.कु. सीमा, ब्र.कु. संतोष प्रधान कुलदीप शर्मा को सौगात देते हुए।